International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 64-70

महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम् विद्यालय में हिन्दी माध्यम से प्रवेशित छात्रों की समस्याओं का अध्ययन

पुष्पा मेहता*
डॉ. विजयशंकर आचार्य**

प्रस्तावना

भारत में 1935 में लार्ड मैकाले ने अपना स्मरण पत्र गवर्नर जनरल की परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे विलियम बैंटिक ने स्वीकार करते हुए अंग्रेजी शिक्षा का अधिनियम 1935 पारित किया। 1954 के वुड के डिस्पेच को भारत में शिक्षा का मेग्नाकार्टा माना जाता है द्वारा अंग्रेजी शिक्षा पर बल दिया गया 1958 में मैकाले द्वारा इंडियन एजुकेशन एक्ट बनाया गया। जिसके द्वारा अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। 1976 से पूर्व शिक्षा पूर्ण रूप से राज्यों का उत्तरदायित्व था। 42 वें संविधान संशोधन द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में डाला गया अतः शिक्षा पर राज्य व केन्द्र मिलकर कार्य करते हैं।

राजस्थान में अंग्रेजी शिक्षा सर्वप्रथम अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र से प्रारम्भ हुई। अलवर के शासक बनेसिंह ने अलवर में अंग्रेजी माध्यम् विद्यालय की स्थापना की उन्नीसवी सदी के अंत में राजस्थान शिक्षा के प्रसार में शासको, प्रतिष्ठित नागरिकों, अंग्रेज अधिकारियों ने सराहनीय योगदान दिया। नौकरी में अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से उन्नति का मार्ग खुला।

उपरोक्त विकास क्रम में कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर द्वारा क्रमांक–शिविरा–मा/माध्य/अंग्रेजी माध्यम् 12019–20 दिनांक 16–06–2019 के तहत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर '' महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) की स्थापना की गई।

राजस्थान सरकार द्वारा प्रथम अंग्रेजी माध्यम् राजकीय विद्यालय जयपुर के मानसरोवर में जुलाई 2019 से प्रवेश प्रारम्भ किया गया। तदुपरान्त राज्य सरकार द्वारा 33 जिला मुख्यालय पर प्रथम चरण अंग्रेजी माध्यम विद्यालय रूपान्तरित किए गये राज्य सरकार द्वारा देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि की दृष्टि से अंग्रेजी माध्यम् रूपान्तरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई। वैश्वीकरण के समय में शिक्षा के सतत विकास व वैश्विक शिक्षा के विकास का एजेंड़ा के तहत अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का प्रारंभ किया गया जिससे राज्य के विद्यार्थी विश्व समुदाय के साथ अपना भविष्य उन्नयन हेतु कार्य कर सके। अतः विद्यार्थी को अंग्रेजी माध्यम् का वातावरण उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राज्य ''राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर '' महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) कक्षा एक से बारहवी तक, स्थापित करने का निर्णय लिया गया हैं। ताकि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी भी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें इन विद्यालयों को जिलों एवं ब्लॉक में उत्कृश्टता के केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा।

अंग्रेजी माध्यम विद्यालय की स्थापना

राज्य में 33 जिला मुख्यालयों पर और 301 ब्लॉक मुख्यालयों पर चरणबद्ध रूप से स्थापना की गई।

- निदेशक महोदय के निर्देश पत्र दिनांक 14.06.2019 द्वारा प्रत्येक जिले के मुख्यालय पर एक विद्यालय का चयन कर 33 विद्यालय की सूची जारी की गई।

* शोधार्थी, एस.के.डी. यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़, राजस्थान।
** पर्यवेक्षक, असोसिएट प्रोफेसर, एस.के.डी. यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़, राजस्थान।

- चयनित विद्यालय में प्रथम चरण में अंग्रेजी माध्यम् कक्षा एक से आठवीं तक प्रारम्भ किये जायेंगे आगामी वर्षो में क्रमशः नवीं, दसवीं, ग्यारहवी एवं बारहवी कक्षा संचालित की जाएगी। इस प्रकार स्थापना के चतुर्थ वर्ष में विद्यालय का स्तर प्रथम से बारहवीं तक का होगा।
- उक्त विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी यदि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा नियमित नहीं रखना चाहते हो तो उन्हें नजदीक के हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाएगा और अंग्रेजी माध्यम के इच्छुक विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम में उसी विद्यालय में प्रवेश हेतु आवेदन करने के पात्र होंगे।
- विद्यार्थियों को अंग्रेजी माध्यम की पाठ्य–पुस्तकें निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी।
- महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम्) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर से सम्बद्ध रहेगा। पूर्व विद्यालय की सम्बद्धता का स्थानान्तरण नवीन विद्यालय के रूप में बोर्ड द्वारा किया जाएगा।
- महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में गुणवतापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए RTE मानकों के अनुरूप सैक्शन निर्धारित किये जायेंगे। कक्षा एक से पांच तक 30, छ से आठ में 35 एवं नवीं से बारहवीं तक 60 विद्यार्थी प्रति सैक्शन निर्धारित रहेंगे।

महात्मा गांधी विद्यालय (भौतिक अवसंरचना)

विद्यालय भवनः– चयनित विद्यालय का भवन ही ''महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम्) का भवन होगा। प्राथमिक कक्षाओं के लिए कक्षा–कक्षों को गतिविधि आधारित शिक्षण कक्षों के रूप में रूपांतरित किया गया हैं। उपलब्ध संसाधनो की कमी की स्थिति में प्राथमिकता से कक्षा–कक्ष, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेल मैदान, पेयजल सुविधा बालक व बालिकाओं के लिए पृथक–पृथक शौचालय विद्युत कनेक्शन, फर्नीचर ABL कक्षा– कक्ष, नेट कनेक्टिविटि की सुनिश्चितता स्मार्ट क्लास, गणित–विज्ञान कक्ष आदि की उपलब्धता चरणबद्ध रूप में विकसित किया जायेगा। ताकि विद्यालय उत्कृष्टता के केन्द्र के रूप से विकसित हो सकें।

- राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत वार्षिक कार्य योजना में उपलब्ध कमियों के आधार पर प्लान तैयार कर भारत सरकार से प्राप्त स्वीकृति अनुसार निर्माण कार्य करवाये जायेंगे।
- राज्य सरकार डस्ट LAD/MPLAD/NSDP/TSP/DMFT आदि के माध्यम व मुख्यमंत्री जन सहभागिता विद्यालय विकास योजना, भामाशाहों, दानदाताओं एवं ब्रैण्ट के माध्यम से भी विद्यालय विकास करवाया जाना प्रस्तावित हैं।
- इस कार्य में जिला स्तर पर उपलब्ध कोष का उपयोग प्रस्तावित हैं।
- M.G विद्यालय में खेलकूद सुविधाओं का विकास नगर पालिका/निगर निगम के माध्यम से किया जायेगा।
- ICT महात्मा गांधी विद्यालय में कम्प्यूटर लैब, इंटरनेट कनेक्टिविटी की उपलब्धता सुनिश्चित की जायेगी एवं कक्षा शिक्षण में ण्ब्ण्ज व स्मार्ट क्लास का उपयोग किया जायेगा।
- **विद्यालय विकास एवं प्रबंध समितिः–** आवश्यकतानुसार SMC/SDMC का पुनर्गठन किया जा सकेगा।

प्रवेश प्रक्रिया

इन विद्यालयों में प्रवेश निर्धारित संख्या के अनुसार ही दिया जा सकेगा। अधिक संख्या में फॉर्म की स्थिति में लॉटरी प्रक्रिया प्रयोग लाई जायेगी उक्त विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण हेतु इच्छुक छात्र द्वारा आवेदन सम्बन्धित विद्यालय के कार्यालय में जमा करवाया जायेगा। महात्मा गांधी विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक प्रवेशित समस्त विद्यार्थियों का उक्त विद्यालय में नवीन नामांकन किया जाएगा तथा संस्था प्रधान उक्तानुरूप नवीन स्कॉलर में पंजीयन सुनिश्चित करना, उपरोक्त प्रक्रिया से नव प्रवेशित छात्र जो हिन्दी माध्यम से अंग्रेजी माध्यम में प्रवेश करेंगे उनके समस्त समस्याओं का अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया जायेगा।

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) द्वारा वर्तमान समय में निजि क्षेत्र द्वारा व्यापारपूर्ण शिक्षण से मुक्ति राजकीय विद्यालय की धूमिल छवि को उभारने हेतु राज्य सरकार की सराहनीय योजना हैं। अतः योग्य शिक्षक द्वारा छात्रों की समस्याओं का निवारण अपेक्षित हैं। व छात्र–अभिभावक में उज्जवल भविष्य हेतु इन विद्यालय का महत्वपूर्ण दरगामी परिणाम अपेक्षित हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा का माध्यम एक सर्वकालिक महत्व का विषय हैं। स्वतन्त्रता पश्चात से भारतीय शिक्षा को महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए गठित विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा शिक्षा माध्यम की विस्तृत रूप से एकाधिक बार चर्चा भी की गई है, और इस विषय पर गंभीर मंथन भी हुआ हैं। नई शिक्षा नीति–2020 में भी प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षा माध्यम पर विषद चर्चा की गई हैं। यद्यपि लोकतांत्रिक सरकारें बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा मातृ भाषा में उपलब्ध कराने की पक्षधर रही है, तथापि समानान्तर रूप से निजि एवं सार्वजनिक क्षेत्र में संचालित अंग्रेजी माध्यम विद्यालय अभिभावकों के लिए सदैव आकर्षण का विषय रहे हैं। शहरी क्षेत्रों के अभिभावकों के समान ही ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक भी अपने बच्चों को ऐसे विद्यालयों में प्रविष्ठ कराने के इच्छुक रहे है, जहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के साथ–साथ व्यय उनही वहन क्षमता में हो। इसी को दृष्टिगत रखते हुए राजस्थान राज्य सरकार ने महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना एवं प्रसार वृहद स्तर पर करने का निश्चय किया हैं। प्रारम्भिक रूप में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना चुने हुए पूर्व से संचालित हिन्दी माध्यम के विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में रूपान्तरण के साथ की गई हैं। उच्च स्तर पर लिये गये निर्णय के अनुसार जिस हिन्दी माध्यम विद्यालय का महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में रूपान्तर किया जाता है, वहां पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश को वरियता प्रदान की जाती हैं। इस स्थिति में छात्र–छात्राओं एवं उनके अभिभावकों के समक्ष निम्नलिखित प्रश्न उठते हैं–

- छात्र–छात्रा जो पूर्व में हिन्दी माध्यम के विद्यालय में अध्ययनरत था वह इस विद्यालय के अंग्रेजी माध्यम में रूपान्तरित हो जाने के कारण अंग्रेजी माध्यम अपनाने का विकल्प चुने अथवा अपना प्रवेश अन्य किसी हिन्दी माध्यम वाले विद्यालय में करवायें।
- उपर्युक्त बिन्दु (1) के संदर्भ में कुछ बच्चों के अभिभावक निकटतम अन्य हिन्दी माध्यम विद्यालय नहीं होने के कारण अथवा अपने ग्राम या स्थान से लगाव, बच्चे द्वारा अपने मित्र समूह से पृथक नहीं होने की इच्छा आदि के कारण विवशता में अंग्रेजी माध्यम के इसी विद्यालय में प्रवेश ले लिया जाता हैं।
- बिन्दु सं. (2) के अतिरिक्त कुछ अभिभावक अपने सामाजिक समूहों के अन्य व्यक्तियों से प्रभावित होकर, सोशल मिडिया के समाचारों से आकर्षित होकर अपने परिवेश एवं बच्चे की क्षमता को अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेश करा दिया जाता हैं।
- उपर्युक्त बिन्दु सं. (2) एवं (3) के अंतर्गत अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में प्रविष्ठ छात्र इस शोध का अध्ययन क्षेत्र निर्मित करते हैं। इन बच्चों द्वारा अन्यन्यतर कारणों से अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेश लिए जाने के पश्चात किन समस्याओं का सामना किया जाता है, यह ज्ञात करना न केवल इन विद्यालयों को उपयोगी एवं बाल शास्त्र के नियमानुसार संचालित किये जाने के लिए आवश्यक है, वरन् अभिभावकों के साथ–साथ विद्यालय प्रशासकों के लिए भी उपयोगी हैं।

शोध उद्देश्य

शोध को सही दिशा में संचालित करने एवं उपयोगी परिणाम प्राप्त करने हेतु उपयुक्तापयुक्त उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना आवश्यक हैं। उद्देश्यों के क्रम में ही समस्या का विश्लेषण किया जाकर उपयुक्त शोध विधि का चयन किया जाना एवं इससे परिणाम प्राप्त करना सम्भव होता हैं। इस शोध सम्पादन से पूर्व शोधकर्ता द्वारा किये गये साहित्य अध्ययन एवं विषय विशेषज्ञों से विचार–विमर्श पश्चात शोध के निम्नांकित उददेश्य निर्धारित किये गये–

- पूर्व में हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली अध्ययन संबंधी समस्याओं को ज्ञात करना।
- पूर्व में हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली मनोवैज्ञानिक समस्याओं को ज्ञात करना।
- पूर्व में हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर उनकी सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं की पहचान करना।
- हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर उनकी समस्याओं के लिए उपयुक्त सुझावों का प्रतिपादन करना।

अध्ययन का परिसीमन

इस शोध का अध्ययन क्षेत्र बीकानेर जिले के सात शैक्षणिक ब्लॉक– बीकानेर, श्रीकोलायत, श्रीडुंगरगढ़, नोखा, पॉचू, लूणकरणसर तथा खाजूवाला में संचालित महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों तक सीमित रखा गया।

शोध न्यादर्श

शोध द्वारा उपयोगी परिणामों के निष्कर्षण एवं समंक संकलन हेतु न्यादर्श का चयन महत्वपूर्ण होता हैं। न्यादर्श का चयन करना न केवल श्रम एवं अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, वरन् दन्तों का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण के लिए भी उपयोगी होता हैं उक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए इस शोध कार्य के लिए यादृच्छिक आधार पर प्रत्येक शैक्षिक ब्लॉक से 1–1 महात्मा गांधी विद्यालयों की कक्षा 5 तथा कक्षा 7 में अध्ययनरत 5–5 विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का चयन अध्ययन के लिए किया गया। चयनित न्यादर्श का विवरण निम्नांकित तालिका सं.–1 में दृष्टव्य हैं–

जिला–बीकानेर

शैक्षिक ब्लॉक	विद्यालयों की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या		अभिभावकों की संख्या
		कक्षा–5	कक्षा–7	
बीकानेर	1	5	5	10
श्री कोलायत	1	5	5	10
श्री डुंगरगढ	1	5	5	10
नोखा	1	5	5	10
पांचू	1	5	5	10
लूणकरणसर	1	5	5	10
खाजुवाला	1	5	5	10

उपर्युक्तानुसार न्यादर्श में सम्मिलित बीकानेर जिले के कुल महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की संख्या 07, इन विद्यालयों की कक्षा–5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या 35, कक्षा–7 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या–35, कक्षा–7 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या 35 तथा अभिभावकों की संख्या 70 हैं।

शोधविधि

शोध अध्ययन हेतु अनेकानेक शोध विधियां उपलब्ध है, जिनमें से शोधकर्ता द्वारा अपने शोध के उददेश्यों, आवश्यकता एवं विविध प्रकारेण उपयुक्तता को दृष्टिगत रखते हुए शोध विधि का चुनाव करना आवश्यक होता हैं। प्रस्तुत शोध का विषय अपनी प्रासंगिकता की दृष्टि से नवीन होने के कारण मूल विषय पर पूर्व में सम्पन्न शोधकार्य न्यून रूप से उपलब्ध हैं, तथापि विषय को संस्पर्शित शोध अध्ययनों की उपयुक्त समीक्षा तथा विषय विशेषकों से चर्चा के उपरान्त इस अध्ययन के लिए निम्न–लिखित शोध विधियों को उपयुक्त मानते हुए चयन किया गया।

- **सर्वेक्षण विधि**

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मूल उददेश्य हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली विविध समस्याओं को ज्ञात करना था। प्रसंगवश विभिन्न क्षेत्रों में संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत भिन्न–भिन्न विद्यार्थियों की समस्याओं का भिन्न–भिन्न होना स्वाभाविक है, अतएव विभिन्न क्षेत्रों के विद्यालयों अध्ययनरत भिन्न–भिन्न विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को जानने के लिए सर्वेक्षण विधि श्रेष्ठ होने के कारण अध्ययन हेतु इसका उपयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि से प्राप्त आंकडो की मान्य स्तर से तुलना करना सरल होता है, इस कारण से भी इस विधि को प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए उपयुक्त माना गया। सर्वेक्षण विधि से प्राप्त आंकडों में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्य महत्वपूर्ण होते है, जिनका सरलतापूर्वक विश्लेषण किया जाना सम्भव होता हैं।

- **साक्षात्कार विधि**

शैक्षिक अनुसंधानों में साक्षात्कार विधि सर्वाधिक प्रचलित विधियों में से एक हैं। इसके अनेक कारण है, जिनमें विषयों का सामाजिक होने के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक एवं प्रायोगिक मिश्रित होने के कारण जटिल होना मुख्य हैं। जटिल विषयों का अध्ययन प्रायोगिक विषयों के अध्ययन के समान नहीं होता हैं। पुनश्च प्रस्तुत शोध के विषयी कक्षा–5 एवं कक्षा–7 के विद्यार्थियों के होने के कारण भी उनकी अनुभूत समस्याओं को जानने के लिए साक्षात्कार विधि का उपयोग करना आवश्यक हो जाता हैं। इस शोध के लिए आंकडो का संकलन अभिभावको से भी किया जाना आवश्यक था अतएव अभिभावकों की शैक्षणिक स्थिति, तथा अन्य विशिष्टताओं को दृष्टिगत रखते हुए भी साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया। साक्षात्कार द्वारा गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार के तथ्य संकलित किये गये।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय एवं क्षेत्र की नवीनता, उपलब्ध संबंधित शोध साहित्य की अति न्यूनता को दृष्टिगत रखते हुए स्व निर्मित उपकरण विकसित किये गये। इसके लिए 5 बिन्दु लेकर स्केल प्रश्नावली का उपयोग किया गया। उपकरण में सम्मिलित प्रश्नों को तीन मुख्य भागों से संबंधित किया गया–(1)अध्ययन संबंधी (2)मनोवैज्ञानिक तथा (3) सामाजिक। प्रत्येक भाग से संबंधित प्रश्नों का विवरण निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं।

क्र.सं.	समस्या का मुख्य क्षेत्र	संबंधित कथन/प्रश्न
1.	अध्ययन संबंधी समस्याएं	• कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रदान किये गये शिक्षण की समझ
		• विद्यार्थी द्वारा लिखित अभिव्यक्ति
		• विद्यार्थी द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति
		• विद्यार्थी का शैक्षिक प्रदर्शन
2.	मनोवैज्ञानिक समस्याएं	• विद्यार्थी द्वारा कक्षा में असहजता का अनुभव
		• विद्यार्थी का तनावग्रस्त होना
		• निंद्रा में कमी
		• भूख में कमी अथवा वृद्धि
		• विद्यार्थी द्वारा एकाकीपन अथवा रिक्तता अनुभव करना।
3.	सामाजिक समस्याएं	• विद्यार्थी द्वारा घर पर असहज व्यवहार
		• मित्र समूह से दूरी
		• पारिवारिक सदस्यों के साथ अनापेक्षित व्यवहार का प्रदर्शन

उपर्युक्त प्रकार से निर्मित उपकरण को प्रशासित करने से पूर्व इसका उपर्युक्त वैधता एवं विश्वसनीयता परीक्षण किया गया।

दत संकलन

दत संकलन हेतु शोधकर्ता स्वयं चयनित विद्यालयों में उपस्थित हुआ एवं संस्था प्रधान तथा शिक्षकों को विश्वस्त करने के पश्चात उनके सहयोग से विद्यार्थियों को स्वइच्छा से उतर देने के लिए सहमत किया। शोधकर्ता द्वारा दत संकलन के लिए पर्याप्त समय प्रदान किया गया एवं एक–एक कर प्रत्येक विद्यार्थी से सहज वातावरण में परन्तु एकान्त में प्रश्न करते हुए साक्षात्कार विधि से प्रश्नावलियों की पूर्ति की गई।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

संकलित दतों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करने हेतु कम्प्यूटर पर एक्सल शीट्स का उपयोग किया गया। प्रत्येक विद्यार्थी एवं अभिभावक से संबंधित समंकों को एक्सल पर सारणीकृत किया गया। प्राप्त परिणामों को निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं–

क्र. सं.	कथन	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रत्युतर									
			पूर्ण असहमत		अंशत असहमत		कोई उतर नहीं		अंशत सहमत		पूर्ण सहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रस्तुत पाठ्य सामग्री समझने में कठिनाई अनुभव होती हैं।	70 विद्यार्थी	6	8.5	5	7.1	7	10	28	40	24	34
2	गृहकार्य, कक्षाकार्य,कक्षा परख के उतर लिखने में समस्या अनुभव होती हैं।	70 विद्यार्थी	5	7.1	4	5.7	5	7.1	30	42	26	37
3	कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रश्न करने पर उतर देने में अथवा शिक्षक से प्रश्न करने में समस्या होती हैं।	70 विद्यार्थी	7	10	13	18.5	2	2.8	23	32.8	25	35.7
4	कक्षा टेस्ट तथा अन्य परीक्षाओं में उतीर्णता अंक से कम अंक प्राप्त होते हैं।	70 विद्यार्थी	13	18.5	9	12.8	7	10	18	25.7	23	32.8
5	कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के साथ असहजता का अनुभव होता हैं।	70 विद्यार्थी	18	25.7	14	20	4	5.7	26	37	8	11.4
6	पढाई के प्रति तनाव अनुभव होता हैं।	70 विद्यार्थी	10	14.2	13	18.5	9	12.8	14	20	24	34.2
7	निंद्रा में कमी अनुभव होती हैं।	70 अभिभावक	8	11.4	6	8.5	5	7.1	22	31.4	29	41.4
8	भुख कम लगती हैं, अथवा अत्यधिक लगती हैं।	70 अभिभावक	16	22.8	11	15.7	8		24		11	15.7
9	बच्चा अकेलापन पसन्द करता हैं।	70 अभिभावक	9	12.8	13	18.5	6	8.5	23	32.8	19	27
10	बच्चा घर पर बात–बात पर क्रोधित होता है, या अन्य प्रकार से असहज व्यवहार प्रदर्शित करता हैं।	70 अभिभावक	20	28.5	12	17.1	4	5.7	12	17.1	22	31.4
11	बच्चा मित्र समूह से दूरी बनाने का प्रयास करता हैं।	70 अभिभावक	11	15.7	8	11.4	7	10	28	40	16	22.8
12	बच्चा पारिवारिक सदस्यों से पढाई में सहयोग की अपेक्षा करता हैं।	70 अभिभावक	6	8.5	14	14.2	6	6.5	18	25.7	26	37

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या खण्ड को देखने से ज्ञात होता है, कि हिन्दी माध्यम से पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेशित होने पर अध्ययन संबंधी, मनावैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याएं अनुभव की जाती है। परिणामों को विद्यार्थी एवं अभिभावक दोनों की दृष्टि से देखने से समान प्रकार के परिणाम प्रदर्शित होते हैं। विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन संबंधी समस्याओं का अनुभव होता है, यह उनके व्यवहार में भी स्वाभाविक रूप से दृष्टिगत होता है, जिसकी पुष्टि न केवल विद्यार्थी स्वयं करते है, वरन इससे अभिभावक भी अपनी सहमति प्रकट करते हैं। विद्यार्थियों की समस्याओं के केन्द्र में अध्ययन संबंधी समस्याएं रहती है, जिनके द्वारा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं को अनुभव किया जाना स्वाभाविक होता हैं। अध्ययन संबंधी समस्याओं में लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति की समस्या मुख्य रूप से दृष्टिगत होती है, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं उवे उनके शैक्षिक प्रदर्शन का प्रभाव मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक समस्याओं के रूप में विद्यार्थियों के व्यवहार में प्रकट होता है। हिन्दी माध्यम से अंग्रेजी माध्यम में प्रवेशित छात्र–छात्राओं की समस्याएं निरन्तर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों से भिन्न होती हैं। इन विद्यार्थियों की कक्षा शिक्षण के दौरान उपलब्धि भी भाषा के व्यवहारित नहीं होने के कारण उपयुक्त नहीं होती हैं। कक्षा एवं परिवार में बच्चों द्वारा असहजता के लिए मुख्य रूप से उनकी कक्षागत उपलब्धियां उतरदायी होती हैं। बच्चों द्वारा अकारण क्रोधित होना, निंद्रा में कमी, भूख का कम या अधिक लगना उनकी मानसिक स्थिति का चित्रण करता है, जिस पर समुचित विचार किये जाने की आवश्यकता हैं।

❖◆❖